464(P)
H (29)
MICROFILM

464

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No. ______

अवाप्ति सं० Acc. No. ______

১৯৬৭ / ১০।২৪

18-1
891.431
S96B

॥ वन्देमातरम् ॥

उस्ताद शिवशंकर कृत सांगीत—

बागे-जलियान ।

लेखक व प्रकाशक—

बा० रामस्वरूप गुप्त, लाला बैनीराम ।

हाथरस ।

सुदर्शनलाल जैन के सुदर्शन प्रेस हाथरस में
रामप्रसाद गुप्त के प्रबन्ध से मुद्रित ।
सम्वत् १९७६

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 464
Date 10.12.71
GOVT. OF INDIA

अथ असली सां० जलियांन वाला बाग लिख्यते ॥

बन्दना

दो०--ओरम् परम भू स्वयम्भूः जगपत जगदा धार।
भक्त की सुनिऐ प्रभो आरत भरी पुकार ॥
चौ०--आरत भरी पुकार दयानिधि हो प्रभु घट २ वासी। अलख अगोचर अजर अमर अन्तर यामी अविनासी ॥ घट२ जानन हार आप प्रभु दीनन के सुख राशी। माया अगम अनन्त बसा रक्खी त्रिशूल पर काशी ॥

गा०--चरण शरण है हम दीन सेवक दया करौ हे दयालु भगवन। खड़े भिखारी तुम्हारे दर पर दया करौ हे दयालु भगवन ॥ हमारी माता जो मात्र भूमी सो भार कितना उठा रही है॥ किसी तरह से हटाओ इसको दया करो हे दयालु भगवन ॥ हमारी करुणा है आप ही से सुने बिना अब गुज़र नहीं है। ज़माने ने कैसा रंग बदला दया करौ हे दयालु भगवन ॥ नजन को दुख निहारा तुम ने क्या भूल ऐसी हुई है हमसे। जो त भी नहीं हो हमको दया करौ हे दयालु भगवन ॥ कौन सा बल था आप में प्रभु हटाया जो भारथा

प्रथ्वी से। क्या सारे पौरुष गमा दिए अब दया करौ हे दयालु भगवन ॥ ये होते हैं अत्याचार हम पर न खोल दृग शँकर देख ते तुम। पुकारे देवी कर जोर करे अब दया करौ हे दयालु भगवन ॥

दो०—दुखित दुख में अति भारत। करौ करुणा कर आरत। जगत पति अंतर यामी ॥कहते बैनीराम गुप्त दुख हरौ प्रजा के स्वामी ॥१॥

पञ्जा

दो०—कुल अदना। आला सुनों अरज मेरी कर गौर। गरज परे कुछ और है·ग़रज़ पैरे कुछ और ॥

चौ०-आन जिन दिनो रुपी लड़ाई जरमन अंग्रेजनकी पब्लिक ने हर तौर मदद की तन मन धन से जिन कीं ॥कटे हजारों भारत बासी सल्हान करी हटन की।देख बिकट संग्राम अक्ल उडगई केसर जरमन की।

क०—गरज कीनी मदत हर तौर तन मन धन लगा करके। हजारौं बीर रण बंका मरे रण सर कटा करके। हजारों हीमुसीबत आफतों कोझेलते हुऐ।हटाकिलकुल लडाईसेदिया जर्मन भगाकरके ॥उसी अहसान मेंइन आमलो ये हिन्द को दीना। कि करके पास रौलट बिल दिया जारी करा कर के ॥

दो०-न्याय ये कीना भारी। किया रौलट बिल जारी ॥

प्रजा सुनकर घबड़ाई । देख हाल ये दिया गांधी ने निज हुक्म सुनाई ॥ [२]

गांधी

दो०—क्यों घबड़ाते हृदय में, इतने भारत बीर ।
सत्याग्रह कर दो शुरू, धरो हृदय में धीर ॥
चौ०-धरो हृदय में धीर बीर मत ना कोई घबड़ाओ ।
असहयोग पर सभी कमर कस तुरत खड़े होजाओ ॥
कार बार सब बन्द करो पूरी हड़ताल मनाओ ।
अहिंसात्मक बनो जेल जाने से मत दहलाओ ॥
क०--कर के सत्याग्रह जारी कदम आगे बढ़ा दीजे ।
सब मिल करके हड़तालों पै सब हड़ताल कर दीजो ।
न घबड़ाओ जरा दिल में खड़े होओ कमर कस कर । रद्द इस को करा देंगे वचन ये सच समझ लीजे ॥
दौ०--त्याग सब संशय दीजे, भजन भगवत का कीजे ॥ अशान्ती जरा न करना । सत्याग्रह कर शुरू न हट कर पैर पिछारी धरना ॥३॥

रङ्गत

दो०--सुनत गांधी के वचन, कर दीनी हड़ताल ।
सभा सुमति होने लगी, सभी जगह फिलहाल ॥
ला०--सब जगह हुई हड़ताल हिन्द के अन्दर ।
कर सभा सब जगह होने लगे लेक्चर ॥ महाराज

सुनो सज्जन सब हित चित धार। सबने बन्द कर दिये एकदम निज २ कारोबार ॥ होगए बीर सब खड़े कमर को कस कर। नहिं जरा जेल जाने का है दिल में डर ॥ इस कदर शोहरत गई छाय कर घर घर। दिये बन्द सबौंने निज २ कारबार कर ॥ महाराज करूं कुछ जरा मुख्तासिर ब्यान। उस दिन हूये सुनो हजारौं लाखौं के नुकसान ॥ कर बन्द दुकानें चले गए हलवाई। उस दिना न कीनी पैदा कच्ची पाई ॥ कर दई बन्द नजिहाओं ने नाजिहाई। हई आई और हैगई बन्द घीग्राई ॥ महाराज सराफा लोहट का वाजार। सबी दुकानें बन्द जिस तरफ देखैं निगह पसार ॥ हैगई बन्द छडिहाई और चुनिहाई। सबरे पसरट्ट बन्द भई चकलाई ॥ हीन बिसांयतिनु तारे बन्द कराई। शाऐ वोरन ने लई न वा दिन सोई ॥ महाराज भई ग्राढत की बन्द दुकान। हुन्डी वालेनु किया न वादिन हुन्डिन कैं भुगतान ॥ नहिं कोई कारखानों भी चलने पायौ। कारीगर घर कूं गये न कोई आयौ ॥ महाराज बन्द भई परचूनी सारी। और चीज की कहा काछिनियां देइ न तरकारी ॥ धोबिनने कीनी वादिन बन्द धुबाई। नहीं बाल बनाने आया कोई नाई। ठेके

दारन ठेका दऐ बन्द कराई । बिन मदक पिऐ बिन गऐ मदकी घबड़ाई ॥ महाराज मिलै नहीं चर्स शराब न भंग । खाई नाहिं अफीम अफीमी जीने से भऐ तंग ॥ दिन भर घूमत साहब के फिरैं सिपाई । नहिं मिलो दूध कहुं जिन्हें चाह के तांई ॥ महाराज मिले बिस्कुट न डबलरोटी । कहैं पादरी यार आज तकदीर भई खोटी ॥ इस तरह कहन लागे वो गिट पिट वारे । रहे कूद पेट में चूहे भूक के मारे ॥ उस दिना तमोलिन ने नहिं बेचे पाने । रंडियां हुडक में छाली लगी चबाने ॥ महाराज कहूं कहां तलक बयान उचार । उस दिन कीने बन्द सबों ने निज २ कारोबार ॥ था जोर उन दिनों, भारी अमृतसर में । बस सत्याग्रह की चरचा थी घर २ में । पब्लिक ने निकारी उस दिन एक सवारी ॥ हिन्दू मुसलिम सब भीड संग में भारी ॥ महाराज कमिश्नर ने ये लख ढंग चार । मन ही मन इस तरह कहैं बैनी यों करै विचार ॥ ४ ॥

डि० कमिश्नर

दो०—इस दम हिन्दुस्तान ने, ऊधम रखा उठाय ।
करना चहिये अब कोई, इसका शीघ्र उपाय ॥

चौ०-इसका शीघ्र उपाय करें ये असमं जस मन भारे

औल इन्डिया अब नहिं डरती डर से जरा हमारे।
हिन्दू मुसलिम करी रफाकत एक होगए सारे।
करें हर जगह सभा गांधी के बोलें जयकारे॥

क०—नमाने खोफ दिल आया बडा ऊधम उठाया है। मिले हैं हिन्दू और मुस्लिम क्या सत्याग्रह चलाया है॥ हमारी दाल है इस हाल में मुतलक न गलने की। न अंग्रेजों का दिल अन्दर जरा भी खौफ खाया है॥

दो०—खडा कीना बवाल ये। यहां किचलू सत्यपाल ने॥ ये है इसकी जड जाना। किचलू सत्य पाल को चहिये गिरफ्तार करवाना॥ ५॥

रंगा

दो०—इस विचार ही में दई, सारी रात बिताइ।
सारजेन्ट होते फजर; फौरन लिया बुलाय॥दौ॥

डि० कमिश्नर

दो०—इधर ध्यान देकर सुनो, सारजेन्ट तुम जाउ।
किचलू और सतपाल को; गिरफ्तार कर लाउ॥

चौ०-गिरफ्तार कर लाउ इरादा ये दिल अंदर का है। इन लोगों ने लीडर बन सब को बहकाय रखा है॥ गवर्मेन्ट के डरसे डरमाने परिन्द पर बन है। राज समझरखा इन लोगों ने अपने घर का है॥

दौ०.....लो ये वारन्ट लीजिऐ। न मुतलक देर कीजिऐ॥ पकड कर इनको लाओ। मानो मेरा हुक्म अभी फौरन ही यहां से जाओ॥ ७॥

सारजेन्ट

दो०--माईं डीयर वस हुक्म, है आप का वहाल।
गिरफ्तार करना मगर, इनका वहुत मुहाल॥
चौ०-इनकावहुत मुहाल पकडना ख्याल न दिलमेंलाओ। करने दो जो कुछ करते हैं क्यों इतने घवडाओ॥
हिन्दू मुसलिम एक होगऐ जरा ख्याल दौडाओ।
बिगड गऐ ये अगर समझलो फिर पीछे पछताओ॥
दौ०--नदीजेगा ऐसी सिख। है संग उनके में पबलिक। मान लो सही हमारी, गिरफ्तार गर करें उन्हें वलवा हो जावे भारी॥८॥

डि० कमिशनर

दो०--वन कर के यूरोपियन, डरने लगे जनाव।
हां साहव क्या ईंटका, पत्थर दिया जवाब॥
चौ०--कर २ के तारीफ हमें पबलिक की लगे सुनाने।
राज हमारा है कहिऐ हम फिर किसका भय माने॥
सारजराट क्या अकिल आप की रही नजरा ठिकाने।
हैं जो काले कुली उन्हीं से लगे आप डरवाने॥
दौ०—और तारीफ सुनाओ, हमारा जिगर जला-

थों। प्रजाकी अगर चलेगी। तो कैसे आप की ह-
मारी कहिए दाल गलेगी ॥९॥

सारजैन्ट

दो०—बेशक साहब ठीक हैं, ये आप का बिचार।
लाऊं दोनों को पकड़-जरा न करूं अबार॥

रंगा

दो०—कहकर इतनी लेलिया-कर दस्ती वारंट।
लगा सोचने इसतरह-फिर दिल में सारजंट॥१०

सारजंट

दो०—दोनों को लामें पकड़-कर के कोई बिचार।
हमको डिपटी कमिश्नर-हुकम दिया सरकार॥

रंगा

गजल—ऐ दिल है इस घड़ी परकैसा विचार तेरा।
चहिऐ ठिकानें होना सब्रो करार तेरा॥ अब हुक्म
तो कमिश्नर फोरन ही दे चुके हैं। तुझ पर ही
अब अगारी है अखत्यार तेरा॥ लेकर के साथ
मोटर धोके से उनको लाऊं। बस ठीक है अरे दिल
ये ही बिचार तेरा॥ क्यों भूलता है रबको बेकसको
नहिं सताना। तेरे न ठीक हकमेंहो अत्याचार तेरा॥१२

रंगा

दो०—यह दिलही दिल सोचके, फौरन ही सारजन्ट।
लेकर मोटर चल दिया, पौकट रख वारंट॥

छंद-मोटरको झट दीनी भगा करमन मगन हरषाइके
कुछ देर में सतपाल के बंगले पै पहुंचा जाइ के ॥
जाकर के अंदर तुरत ही वा अदब से आदाबकर।
पूछी कुशल सरजराट से सतपाल हाथ मिलाइ के॥

सत्यपाल

दो०-साहब कहिये आपका, हाल मिजाज शरीफ।
कैसे किसलीये यहां लाए हो तशरीफ ॥

सारजेंट

दो०-सत्यपाल सुन लीजिये, आप मेरा इरशाद।
किया आपको इस घड़ी, है साहब ने याद ॥
चौ०-साहब ने इस वक्त यहां चलौ बुलाया तुमको।
मुझे आप के पास लिवाने हेत पठाया तुमको ॥
सुन सरकारी हुक्म मैं लेने फौरन आया तुमको।
और न कुछ भी कहा कहा सो हाल सुनाया तुमको॥
दौ०—देर मत पल की कीजे। संग मेरे चल दीजे ॥ आप के ही द्वारे पर। चलौ संग सरकार खड़ी कर दई लाइ कर मोटर ॥ १५ ॥

सत्यपाल

दो०-महरबान जो चाल है, दीजे बता जरूर।
नहीं इस तरह इस घड़ी, जाना है मंजूर ॥
चौ०-जाना ना मंजूर बुलाने गर हुजूर आए हो।
चाल पड़े मालूम हमें कुछ जाल बना लाए हो ॥

रहे बुला आप को कमिश्नर ऐसें फरमाऐ हो। या मेरे नाम का आप वारन्ट कोई लाऐ हो॥

दो०—यौं चलना हमें हमारा। नहीं सरकार गवारा॥ आज क्यों हमें बुलाए। कल थे कुछ नाराज़ कमिश्नर साहब हम को पाऐ॥ १६॥

सारजेण्ट

दो०—गर दस्ती वारन्ट को, देखो तुम सरकार।
तो लो ये मौजूद है, चलो करो मत वार॥१७॥

रङ्गा

दो०—देख दस्त वारन्ट को, त्यार हुए फिलहाल।
सारजेन्ट से इस तरह; कहन लगे सतपाल॥१८

सत्यपाल

दो०—अरज मेरी सुन लीजिऐ, सारजेंट एक बात।
मैं चलने को त्यार हूँ, चलूं आप के साथ॥

गजल—एक अर्ज ये सारजेंट तुम जाना बिसर नहीं। चलने में अब जरा भी है मुझको उजर नहीं॥ लेकिन न किसी तौर से पबलिक के वास्ते। पाऐ हुजूर होने जरा भी खबर नहीं॥ सुन कर के गिरफ्तार मुझे आऐ कुल यहां। फिर उनके दिलको होगा जरा भी सबर नहीं॥ ऐसा न हो उठानी पड़े कुछ तुम्हें आफत। मुझ को डर है ये

हीं और कोई डर नहीं ॥ १९ ॥

दृश्य

दो०--सुनकर के इतने बचन, सारजेन्ट हरषाइ ।
मौटर के चौतरफ से, पर्दा दिए डराय ॥
चौ०-सत्यपाल मौटर के अन्दर तुरत बैठ गए आके।
सारजेन्ट ने दई चला मौटर मानिन्द हवा के ॥
बस्ती के बाहर बाहर जाता है लिए भगा के । कुछ
अरसे में किचलू के की खड़ी द्वार पर जाकें ॥
दौ०—उतर के फौरन धाया । पास किचलू के
आया ॥ जरा ना बिलम लगाया । सारजेन्ट ने इस
प्रकार किचलू को बचन सुनाया ॥ २० ॥

सारजेन्ट

दो०--बचन मेरे सुन लीजिये, ऐ किचलू चितलाइ।
सत्यपाल तुमको रहे, मिलने हेत बुलाय ॥२१॥

किचलू

गजल—साहब बताउ हमको, कहां यार हमारे ।
होता है कुछ शुभा सा, सुन कर बचन तुम्हारे ॥२२॥

सारजेन्ट

गजल—मौटर खडी हुई है, वो आपके दुआरे ।
मिलने बुला रहे हैं; तुम्हें यार वो तुम्हारे ॥ २३॥

किचलू

गजल-साहब न बात आती कुछ हमरे ध्यान में है ।

उन्को न कोई पर्दा, मेरे मकान में है ॥ २४ ॥

सारजेन्ट

गजल—इस वक्त वो मिलन को साहब से जा रहे हैं। कुछ काम है जरूरी, इस्से बुला रहे हैं ॥२५॥

किचलू

गजल—मुतलक न बार कीनी, फौरन चला मैं धाके। देखा खड़ी है मोटर मिलने चला सिहाके ॥२६॥

सारजेन्ट

गजल—वारन्ट आपका ये, लो इसको देख लीजे। मोटर में बैठ चलिये, साहिब न बार कीजे ॥ २७॥

रक्का

दोहा—देखत ही वारन्ट को; किचलू मन हरषाय।
मोटर में निज यारु ढिग, फौरन बैठे आय ॥

चौ०-मोटर में बैठे किचलू सरजेन्ट हृदय हरषाके। दोनों को ले साथ चले फौरन ही वहां से धाके ॥ बस्ती के बाहर बाहर अन्दर थोड़े अरसा के। खड़ी कमिश्नर के बंगले पर मोटर कीनी जाके ॥

दौड़—खड़ी कीनी जा मोटर। चले हैं तुरत उतर कर ॥ पास अपने बिठला के। साहब किचलू लाल से कहैं बचन समझा के ॥ २८ ॥

डि० कमिश्नर

महरबान मन आइए, लीडरान पंजाब।
...लिक को सहका रखा तुमने खूब जनाब ॥

चौ०-खूब जनाब आपने पब्लिक को बहकाय रखा है।
लीडर बनकर रिआया को अच्छा भड़काय रखा है॥
हम लोगों का तो डर बिलकुलही तुमत्याग दिया है।
क्यों साहिब क्या राज आपने गिन रक्खा घरका है।

क०-इस घड़ी आपने अच्छा सेव अपना जमाया है। हुकूमत मानना तो सब के दिल से ही हटाया है॥
कहा सब आपका करते न मानें हुक्म सरकारी।
वाह क्याखास है तुम को जाल अच्छा बिछाया है॥
आप को हुक्म है ये बास तुम अज्ञात का कीजे।
हुक्म जो लार्ड का आया सो बस तुमको सुनाया है॥

दौड़....खूब बन बैठे लीडर। न कुछ कीना दिल में डर॥ सब जगह सभा जुड़ा कर। देउ मन माने लेक्चर। हुक्म आपको यही बास अज्ञात करौ तुम जाकर॥ २१॥

किचलू

दो०-बास करन अज्ञात को, जाना हमें जरूर।
साहब बेशक हुक्म ये, है हमको मंज़ूर॥

चौ०-सब कुछ है मंज़ूर है जो कुछ हुज़ूर का फ़रमाना।
लेकिन जेबा न ये आप को है बेजां धमकाना॥
अच्छा नही हमारी साहब है दिल्लगी उड़ाना।
शेरों को चाहो गीदड़ भबकी से ही धमकाना॥

गजल—कब हमें इन्कार है अज्ञात जाने के लिये। ये सखुन कहते भला हमको डराने के लिये॥ ये तो क्या है मामला कुछ और कर दीजै हुकम। खुद व खुद तय्यार हैं हम जेलखाने के लिये॥ सैकड़ों झेलें मुसीवत होके कुरबां हिन्द पर॥ कुछ नहीं डर है जरा भी जान जाने के लिये॥ जेल में हम चक्कियां पीसें बनाएं रस्सियां। है न कुछ इन्कार सदमों के उठाने के लिये॥ साफ लफ्जों में है ये कानून कुदरत का बयान। खुद मिटे जाएं जो औरों के मिटाने के लिये॥

दो०—नयह अल्फाज सुनाओ। हमें अज्ञात पठाओ॥ ये दम हरदम भरना है। देकर मूंड ओखली फिर का रामन से डरना है॥ ३०॥

रंगा

दो०--दौनों को दिया भेज ... इधर कहीं फिलहाल।
पब्लिक ने पाई खबर, छाया रंज मलाल॥

चौ०-छाया रंज मलाल हाल ये सुन पबलिक घबड़ाई। किचलू और सतपाल दए दौनों को कहीं पठाई॥ कूंचा गली बजार यही घर २ में शौहरत छाई। आगे का जो हाल सुनो सब सज्जन हित चित लाई॥

दो०....बिकल व्याकुल पुर बासी। बहुत छा रही उदासी॥ रही ना अकल ठिकाने। देख हाल ये एक

बुजुर्ग यों लागे सखुन सुनाने ॥ ३१ ॥

एक बुजुर्ग

दो०--क्यों घबड़ाए जात हो पुरजन सुनो तमाम।
मैं बतलाऊं आप को सो कीजे एक काम ॥

छन्द....सब मिलके चल दीजे पुकारें दीनताकी कीजिऐ। साहब कमिश्नर के चलो बँगले पै सब चल दीजिऐ ॥ करके खुशामद मिन्नतें हर तौर से समझाइके। सतपाल और किचलू को लामेंगे अभी छुड़वाय के ॥ ३२ ॥

रक्षा

दो०--सुनकर सखुन बुजुर्ग के जरा करी ना वार।
बँगले पै हितजान सब पब्लिक भई तयार ॥

छन्द.... सब मिल के पुरजन चल दिए इस कदर भेष बनाय के। सर पैर नंगे कर लिया ना कोई सस्त्र उठाय के ॥ बोले हैं जय गान्धी की सब मिलकर चले हैं धायके। रोका है पुल के पास इन्को कुछ जनों ने आयके ॥ अफसर था जिनके साथ में कुछ गवरमेन्टी ज्वान हैं। वो रोक पब्लिक कें तई करने लगा यूं ब्यान है ॥ ३३ ॥

अफसर

दोहा--जाओ पीछे लोटकर, सुनो बचन उर धार।
आगे बढ़ने में अबी, बढ़जावे तकरार ॥

चौ०-बढ़जावे तकरार मुफ्त सब दोगे जान गमा के। इससे जाओ लौट सबों को कहता हूं समझा के ॥ बे मतलब क्यों रहे जान को तुहमत बला बिसाके। अगर नहीं मानो तो दूं फौरन गोली चलवा के ॥

दौड़....न अरसा जरा लगाऔ। लौट पीछे को जाऔ॥ मचाया कैसा ऊधम। मानो हटौ नहीं तो करदूं सब के अबी खतम दम॥ ३४ ॥

प्रतिनिधि

गजल-आप सरकार शुरू मुफ्त मत फिसाद करो। खुदा के खोफ डरो रब को जरा याद करौ ॥ नहीं हम लोग यहां आऐ हैं लड़ने के तईं। खुशामद आपसे बस ये है कि इम्दाद करौ ॥ ३४ ॥

अफसर

गजल-चलो पीछे को हटो हमसे न फरियाद करौ। जाउ घर लौट सबी क्यों वृथां विवाद करो ॥ अगर मानों न कही तो दऊँ गोली चलबा। जिन्दगी मुफ्त में नाहक क्यौं बरबाद करौ ॥ ३६ ॥

प्रतिनिधि

गजल....रहम कुछ दिल में हमारा भी तो लाऔ साहिब। अजी मंजूर यहां आप ही फरियाद करौ ॥ छुड़ा दो आप हमारे दोऊ नेताओं को। हमारा चाहें तो बस आप इसके बाद करौ ॥ ३७ ॥

अफसर

ग़ज़ल—नहीं जाते हो काले मदहोस खिलाडी यहां से, हटो पीछे को मती ज़ास्ती बकवाद करो ॥ अच्छा लो इसका नतीजा अभी देता हूं तुम्हें, चला- ओं गोली लो नेताओं की इम्दाद करो ॥ ३८ ॥

प्रतिनिधि

गज़ल....आहि अफसोस धसी गोली गजब सीने में। हिन्द वालो अगार सीनें कों आल्हाद करो ॥ तेरी गर्दन पै पडे वेकसों का खूं जालिम। मानलो अर्ज फना मत हमें जल्लाद करो ॥ हमारे गुल को हमें दो मिला बुलबुल की तरह। सर पै हत्याधरो मत जुर्म ये सैय्याद करो ॥ मादरे हिन्द पर कुर्बान हो जाओ गुप्ता। अडा सीना हो खडे राम राम याद करो ॥ ३९ ॥

वक्ता

दो०—इस बिध दे दीना हुकम, अफसर ने ततकाल।
हिन्द बीर कैइन की, करदी जान हलाल ॥

बहर शिकिस्त—सुन हुक्म अफसर का गोली फौरन प्रजा के ऊपर चला रहे हैं। थे बीर कट्टर सो खोल सीना मुकाबिले पर अडा रहे हैं ॥ वो गोली एक दम चली है सननन दे रहम हो के दई

चला के। थे हिन्द वाले जो बीर बांके खडे हैं सीना अड़ा २ के॥ लो आन गोली उन बेकसों के वो साफ सीने गई समा के। खतम अदम दम हुआ रवाना। गिरे हैं धरनी पछार खाके॥ मारे बे खता इस जहां से इनका ये आव दाना उठा रहे हैं॥ थे वीर कट्टर०॥ थे बुज दिले जो कुछ उनके अन्दर सो जान अपनी हटे बचाके। जिन्होंने सीना अड़ाया अपना गया हाल उनको काल खाके॥ बो मुख से जै बोलें गान्धी की हुऐ हैं जख्मी परे रम्हा के। कितने ही बीर आज देखो स्वर्ग चले जां दई गमा के॥

शैर—मुकाबिल से सुभट हरगिज न थाके। दिया अपना तुरत सीना अड़ा के॥ कलेजों में गई गोली समाके। जमी गिर २ के जां दीनी गमाके॥ हुऐ हैं कुरबान हिन्द पै भट बो जान अपनी गमा रहे हैं॥ थे वीर कट्टर०॥ किसी ने जाके शहर में कुल ये हाल दीना तुरत सुना के। बिगाडा जो हुल्लडबाज़ थे कुछ चले हैं एक दम गुस्सां में धाके॥ चली है टोली पै टोली बन २ लूट बंक की लई करा के। तार काट दऐ लैन तोड दई आग दफ्त

रों में दी लगा के ॥ गरज यहां तक बना जो उन से वही वे कौतुक रचा रहे हैं ॥ थे वीर० ॥ जल करके अफसरों ने फौरन खबर फौज में दई पठाके। सुनत खबर पल्टन आन कर के घेर लिए चौतरफ सेना के ॥ हंसराज एक था देश द्रोही लिया है घंट वाला बुला के। अगारी की अब लड़ाई की जड़ इसी दुष्ट ने दई जमाके॥ कहते रामस्वरूप दुष्ट जन थे वे दाल अपनी गला रहे हैं। थे बीर कट्टर सो खोल सीना मुकाबिले पर अड़ा रहे हैं॥ ४० ॥

हंसराज।

दो०-बचन मेरे सुनलीजिए इधर लगा कर ध्यान।
घंटा आओ पीट कर बस्ती के दरम्यान ॥

चौ०-बस्ती के दरम्यान आप जाओ मत बिलम लगाओ
घंटो पीट कुल्ल पब्लिक के तईं यही समझाओ ॥
सभा होय जलियान बाग में जाकर सबै सुनाओ।
खोफ न खाओ कोई निडर होकर सब सुन्ने को आओ।

दौ०-जाउ जी जल्दी जाओ, पीट घंटे को आओ।
समय सब को बतलाओ, चार बजे शाम के सभी लेकचर सुन्ने को आओ ॥ ४१ ॥

देश भक्त

दो०बेशक साहब आप की, मानी हमने बात।
पब्लिक में करदूं खबर घंटा लेकर हाथ ॥

छन्द—लेकर के घंटा चल दिया पब्लिक को करने हित खबर। घबडाउ मत कोई हृदय अन्दर सबी रक्खो सबर ॥लीडरतो पकडेगए दोऊ नजदीक पुल गोली चली। नहीं काम घबडानेका कुछ ईश्वर करेंगे सबभली ॥ आओ सबी हो बेफिकर क्या खता देश और राग में। गुप्त सभा हो शाम को जलियांन वाले बाग में ॥ ४२॥

रङ्गा

दो०-इस बिधसों पीटत फिरै, बस्ती में घडियाल ॥
सभा सुननहित त्यारकुल, भई पब्लिक ततकाल

बहर शिकिस्त-आज सुनौ जलियान बाग में क्या भीड पब्लिक की छारही है। सभा सुनौं चल-करहिन्दू मुसलिम सदाये हरजासे आरही है। चली है टोली पर टोली वन समय सुहावन दिखा रहा है। उस वक्त बागे जलियान अन्दर। जलूश क्या अच्छा आरहा है। हजारौं बूढे जवान वच्चौं का देखो दम पर दम जारहा है। जय बोलता जाता

है। कोई २ गीत गांधी के गारहा है। असहयोग की धुन सब के मूं से क्या देश भक्ती दिखा रही है॥ सभा सुनों चलकर हिन्दू मुसलिम सदा ये रहजां से आ रही है॥३॥ दिया हुकम फौरन प्रति-निधों ने निहारो सब कार्य कर्ता जाके। बद ख्याल कोई किसी तरह का न देवे ऊधम यहां मचा के॥ हाथ जोड देते धीर सब को रहे हैं उपदेश कुया सुनाकै। उधर मदन घर तयार होकर चला है जलि यान बाग धाकै॥ पास बुलाकर के मात उसकी सखुन इसतरह सुना रही है॥ सभा सुनो चलकर हिन्दू मुसलिम सदा ये हरजां से आरही है॥४३॥

मदन की मां

दोहा-बेटा छौना लाडले, दे सच मुझै बताइ।
सुनी मैनें तू सभा को, बागे जलियां जाइ॥
चौ०-जाता है बागे जलियां तू कुमर पुत्र सुत मेरे।
मोकूं दै बतलाइ पुत्र क्या बसी हृदय में तेरे॥
मैने सुनी चली है गोली पुल के पास सवेरे।
घायल परे मौत वहां पर और मारे गए घनेरे॥
दौ०—बचन मेरे चितलाओ। बाग जलियां मत जाओ॥ मेरे तू इकलो छोना॥मान कही मत

जाय बाग जलियां को लाल पिगैना ॥ ४४ ॥

मदन का मा ॥

दोहा-सुबह मात गोली चली, बेशक पुल के पास ।
न कुछ वहां डर वाग में, रख दिल में विश्वास ॥

चौ०-रख दिल में विश्वास सत्य लै जान मात तू भोली जो कुछ भी होनी थी मय्या सुबह सोई सब होली वहां होवेगी सभा जाइ पब्लिक टोली पर टोली । देश भक्त जब सत्पथ पर तब चलै मात क्यों गोली ॥

दौ०—तेरे दिल कहा समाइ । जाने की करै मनाई ॥ न मानू मैं तो जाऊं। अगर न जाने देइ जननि तो खाने को नहीं खाऊं ॥ ४५ ॥

माता

ठुमरी—मानौ मानौं पुत्र हमारे मत ना जाउ वाग जलियान । सुबह चल चुकी है जब गोली पुल पर पिशर हजारी ॥ मालुम मुझको पडी मचे वाग में उपद्रव भारी ॥ तजौ हठ तुम मत ठानौ ठान । मानो मानो पुत्र हमारे मत ना जाउ वाग जलियान ॥ ४६ ॥

ठुमरी —मय्या जाऊंगा २ देखन सभा बाग जलियान । क्या परबा है अगर गए हैं देशभक्त कुछ मारे । मरे नहीं वह अमर भए सीधे सुरलोक सिधारे

खोई भारत के हित जान--मय्या जाऊंगा २ देखन सभा बाग जलियान ॥ ४७ ॥

मदन

ठुमरी—मानो २ पुत्र हमारे मत ना जाउ बाग जलियान । सात पांच वारे है जिन के डाहन दिल में होना ॥ है सुत इकलो डार मेरे तूही इकलौता छौना । इस दम मत सुत करो पयान ॥ मानौ २ पुत्र हमारे मत ना जाउ बाग जलियान ॥ ४८ ॥

मदन का माता

ठुमरी—मय्या जाऊंगा २ देखन सभा बाग जलियान । मुगलौं ने सुत गोबिन्दसिंह को दिये दिवाल चिनाके ॥ मगर न छोडा धर्म जमाना रहा सुयश यश गाके । जिनको लगे न प्यारे प्रान ॥ मय्या जाऊंगा जाऊंगा देखन सभा बाग जलियान ॥ ४९ ॥

माता का पुत्र

ठुमरी—मानो मानो पुत्र हमारे मत ना जाउ बा जलियान ॥ छोडौ ऐसा धर्म भाड मैं पटकौ ऐसी-शान । ऐक संग भैराय पर जो आग सरा सर जान ॥ हैं वे नर मूरख अग्यान । मानौ मानौ पुत्र हमारे मत-ना जाउ बाग़ जलियान ॥ ५० ॥

मदन का मा से

ठुमरी—अव्वल तो वहां चलै न गोली हम सच सच फ़रमा में। चल भी जावै तौ फिर कब हम मरने से दहला में॥ देश परजा मैं कुरबान। मय्या जाऊं गा जाऊंगा देखन सभा बागे जलियान॥ ५१॥

माता का

ठुमरी—मानो मानो पुत्र हमारे मतना जाउ बाग जलियान। छोड़ौ हट को कुमर न गरचे तुम्हैं वहां है जाना। जाना तौ सुत देख उपद्रव कहीं तरह दे जाना जो कहना शर्मा का मान। मानौ मानौ पुत्र हमारे मतना जाउ बाग जलियान॥ ५२॥

मदन का।

ठुमरी—मय्या जाऊंगा २ देखन सभा बाग जलियान। क्या मतलब है हमैं उपद्रव से जो कोई उठा में। मगर जो हैं भट धर्म बीर कब मरने से दहला में। देवी तजै न अपनी आन—मय्या जाऊंगा जाऊंगा देखन सभा बाग जलियान॥ ५२॥

रंगा का

दो०-इस तरियां दौनौ रहे—मा बेटा बतराइ।
हुक्म पाय कर चलदिया-गया बाग में आइ॥

चौ०-गया बाग में आय यार संग लीए हुए मदन है।
हंस राज दे रहै लैक्चर सुने सकल पुरजन है॥

ये ढंग देख वहां के ओडायर खाफुस्सा मन है।
संग मशीनगन भय डायरके बुलालई पल्टन है॥
दौ०—न अरसा मुतलक कीना। हुक्म फौरन दे दीना॥ सुनत डायर हरसाया। पास बुला कर्नेल तुरत डायर यूं हुक्म सुनाया॥ ५४॥

डायर का।

दो०-ओ कर्नल माई डियर, सुनो हमारा बैन।
रहू बहुत बलबा मचा यहां ये यूं दिस मैन॥
चौ०-अभी फौजको सुना हुक्म दीजे चौतर्फ लगाके।
हुक्म हमारा मानो दो जल्दी से फैर कराके॥
डैम फूल काले कुलियों ने ऊधम रखा मचा के।
भय रयाया जलियान बागदो जमीन दौज करवाके॥
दौ०-हुकम देदो योधन को, लाय कर मशीन गन को, नाम नहीं यहां डरका है-इन लोगों ने गज समझ रक्खा अपने घरका है॥ ५५॥

कर्नल का।

दो०-बेशक साहब आपका, हुक्म हमें मञ्जूर।
मगर न ऐसा चाहिये, करना तुम्हें हुजूर॥
चौ०-इस दम ऐसा नहीं चाहिए सोचलेउदिल अंदर।
करने दो जो कुछ करते हैं इस में क्या कुछ है डर॥
पब्लिक सारी जमा बाग में उपदेशार्थं रहे कर।

ग२ रियाया को मार देउ तौ राज करोगे किसपर ॥
क०-अजी साहब हुक्म ऐसा सुनाने में मजा क्या है।
खामखां के उपद्रव को उठाने में मजा क्या है ॥ ये
बातें सास्त्र से और नीति से कानून से देखौ।
निहत्थो पर भला सस्तर उठाने में मजा क्या है ॥
कहो तौ फैर कर खाली भगा देवें अभी सबको।
अगर ये नीम रासे की जमाने में मजा क्या है ॥
सिवा जिन्में कि आत्माबल के और कुछ भी नहीं
बल है। बेकसों को भला गुस्सा सताने में मजा
क्या है ॥

दौड़—अगर तुम इन्हें सताओ। नतीजा फिर
क्या पाओ ॥ होय भारी बदनामी। साहब रोज
हशर के जाकर बनो नर्क के गामी ॥ ५६ ॥

डायर

थिएटर-अजी अच्छी सुनाई ये बतियां चलो वाह
वाह वाह। सुनाते हो हमको नसीहत क्या आप।
हमें क्या गरज पुन्न हो या पाप इसी तौर इन
पर पडेगा दबाव ॥ जमेगा हमारा जबी तो रुआब।
अजी अच्छी सुनाई ये बतियां चलौ वाह२वाह॥५॥

कर्नल

थिएटर-क्या ये दिलमें तुम्हारे समाई अजी वाह२

वाह। निहत्थों पै सस्त्रों का करना प्रहार। है लिक्खा कहां पर बतलाओ सरकार॥ यहां तो ज़मालोगे माना रुआव। क्या रोजे हशर दो खुदाको जवाव॥ क्या दिलमें तुम्हारे समाई अजि वाह२वाह॥

डायर

थिएटर-ओडायर ने दीना ये हमको हुकम। सो मानों अबी तुम माई डीयर कम॥मशीनगन चलाओं करौं खूब वार। न हुज्जत तुमारी चलेगी जिनहार॥ अजि अच्छी सुनाई ये वतियां अजि वाह वाह वाह॥ ५९॥

कर्नल

थिएटर.....न मानें तुम्हारा हम हुकम अब। ले खूं अपनी गर्दन सो क्या है मतलब॥ चले जांयगे बस अभी इस घड़ी। खुदा का है डर बैनी कहते खरी॥ क्या ये दिलमें तुम्हारे समाई अजि वाह वाह वाह॥ ६०॥

डायर

थिएटर-तुमने कम्के है अफ़सोसक्योंडर गया। जो वल था सो तेरा कहां वह गया॥ लगाता है वट्टा तू क्यों वातमें। ये सुहाता नहीं शेरोंके भी साथमें॥ अजि अच्छी सुनाई ये बतियां चलो वाह वाह

वाह ॥ ६१ ॥

रङ्गा

दो०—इधर इस तरह हो रही दोनों में गुफ्तार ।
उधर दूसरा कह रहा कर्नल यों ललकार ॥६२॥

दूसरे कर्नल

दोहा—क्या साहब बेबात की, रहे उपाधि मचाय ।
आप कहो सो मैं करूं, दीजे हुक्म सुनाइ ।६३

डायर

दो०—ये जितने पुरजन खडे, करो सबों पर फैर ।
मार सबों को दो यहां बहा खून की न्हैर ॥

रङ्गा

दोहा—सुनकर डायर का हुक्म कर्नल मन हरसाइ ।
ले मशीन गन फौज को, दीना हुक्म सुनाइ ॥

बहर शिकि०-दिया हुक्म फौज को उसी दम बंदूक में कार्तूस पटक रहा है। खुश होके डायर कराये फायर खडा एक तरफ मटक रहा है॥ घिरी चौतरफ फौज बाग के लिए हैं झट मोरचे दबाके। हुक्म सुनाया न देर कीनी दिऐ फैर फौरन ही कराके ॥ आवाज सुनकर खडी जो पब्लिक भगी एकदम भरेरा खाके। मगर कहां जाइ निकल के कोई घेरे हैं कुल नाकें रास्ता के ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY No. 464 Date 10.12.71 GOVT. OF INDIA

शैर—फैर सुन सुन के इत उत को भगी पबलिक सारी। कहां जाती और क्या करती बिचारी। लगी गोलियों की पौछार पड़ने। हाल ये देख हिम्मत सब ने हारी॥

कहां भाग करके जाती पबलिक चौतर्फ जुट कुल कटक रहा है। खुश होके डायर कराए फायर खड़ा एक तरफ मटक रहा है॥ किसी के गोली लगी है सर में किसी के मुख गर्दनों में आके। किसी की नासा कपार फोरा किसी के सीने गई समाके॥ चलतीबंदूकें मिस्ल मेह के झड़ी गोलियों की लगाके। निहरो हां देखो हिन्दू मुश्लिम फंसे हैं ये किस बला में आके॥

शैर—बिचारे देखिए ये हिन्द वाले। पड़े हैं जालिमों के आन पाले॥ हरेक जुबा से बस कलमा यही था। इस बार हमें ईश्वर बचाले॥

बुरा हो तेरा क्यों मार डायर इन बेकसों को झटक रहा है। खुश होके डायर कराए फायर खड़ा एक तरफ मटक रहा है॥ दुनाली बन्दूक कारतूसी की गोली जिस दम लगे हैं आके। बेताब होके सभी बशर बस गिरे जमीं पर पछाड़ खाके॥ शरीर अन्दर समाए छर्रा हुए हैं घायल गिरे रम्हाके। मगर

नहीं मुतलक रहम कीना फसे हैं शय्याद हाथ आके ॥

शैर—बु छरें गोलियों के लागते हैं । गिरें हैं और फिर उठ भागते हैं ॥ बहुत से सोगए उस नींद अफसोस । नहीं जिस नींद से फिर जागते हैं ॥

जो खूं का प्यासा था हिन्द का सो खूं आज खुश हो चटक रहा है । खुश होके डायर कराऐ फायर खड़ा एक तरफ मटक रहा है ॥ कलम बन्द होती है हमारी गिरै हैं आंसु लिखते वयांके । अच्छा है सब कुछ करे जो जालिम इन्साफ होए बरू खुदाके ॥ कितने ही भट शहर पहुंचे एक संग हल चल दई मचाके । कितने ही बच्चे जवान बुड्ढे दिऐ बे खता अदम पठाके ॥

शैर—बे रहम इस कदर जान निकारते हैं । न करते रेहम मारे मारते हैं ॥ रहे जिन्दे जो रोते पीट के सर । पुकारैं त्राहि आंसु डारते हैं ॥

लो हिन्द वालों का आज यहां पर मझधारमें डौंगा अटक रहा है । खुश होके डायर कराऐ फायर खड़ा एक तरफ मटक रहा है ॥ जो वीर गोली चलाने में करता है बेर उसको हटकक रहा है कुछ रहम माना है जिसने दिल में वो दात देकर सकट रहा है ॥

कितने ही वीरों का खाके गोली का प्रान घट २ घटक रहा है। या कोई घायल पिलासा देखौ कहे हाय पानी भटक रहा है॥ कहता है रामसरूप मास्टर खुश होके डायर मटक रहा है॥

दौ०--इस कदर भारत बीता। कर लिया सठ मन चीता॥ हाल लिखते नहिं आवै। इधर मदन इस तरह तडफता पड़ा सखुन फरमावै॥ ६५॥

मदन

व० क०—ऐ सितम गर सितम इस कदर क्यों किया हाय डायर किया ये तें खोटा करम। तेरी गर्दन पै खूं बेकशों का है सब नहीं खोफो खुदा कीया दीया हुकम। हम निहत्थों पै करते हुऐ वार हा अरे पापी न आई जरा भी शरम॥ सुनो भारत के वासी मैं मरता हूं तुम छोड़ना ना धरम छोड़ना ना धरम॥ ६६॥

यार का

व० क०–यार इस वक्त अपना यहां पर कोई आता भाई बिरादर नजर ही नहीं। ऐसे जालिम के हाथों से आकर मरे मौत कूकर की दिल को खबर ही नहीं॥ मारे जायेंगे गोली से इस बाग

में थी ये पहिले से कुछ भी खबर ही नहीं। जो कि माता पिता से कहै हाल जा ऐसा हम दर्द कोई वशर ही नहीं ॥ ६७

मदन का

व० का०--यार अफसोस कच्चे जिगर का है तू ऐसे फिकरे जुवां से सुनाने लगा। ऐसा मरना हो जिस पर हो महेर खुदा मौत कूकर की वेजां व-ताने लगा॥ याद रव को करौ और हरी को रटो घट घटी दम हमारा लो जाने लगा। कुल जमाने से रिस्ता दिया तोड कर धर्म हित प्राण लो मेरा जाने लगा॥ ६८॥

रंगा का

दो०—मदन इस तरह कह तुरत, दीने छोड प्रान।
दम निकला संग यार को, सुनो सुजन सुग्यान॥

एक घायल

व०क०-ऐ दई तें यें कुया रचदई मेरे गोली से घुट २ निकलता है दम। कोई ऐसा न पानी जो लादे मुझे, मुझे ये ही है गम मुझे ये ही है गम॥ लगा छर्रा मेरे जला जाता है ये कुल हमारा जिशम कुल हमारा जिशम। कहते रामसरूप इसी बाग जलियान में मरना लाए थे गोली से लिखा करम॥७०॥

दूसरा घायल।

व० क०-मेरे ईश्वर ये क्या हो गई यहां गती मेरा गोली की चोटों से दूखे जिसम। एक कतरा न पानी का मूं मैं पडा निकला जाता है दम निकला जाता है दम। कोई थोडासा पानी पिला दे मुझे फेर मरके चों पहुंचू मुल्कें अदम॥ कहैं वैनी न यहां पर है अपना कोई हा सितम हा सितम हा सितम हा सितम।

रंगा का।

दो०-घायल तडफैं नीर विन, रहे बहुत घवडाय।
बहुतन कोतो उसी दम, काल बली गया खाय॥

ल०--इस दम आगे मजमून साफ भरता हूं। मैं मगर खुलासा लिखने में डरता हूं॥ महाराज किए जो कुछ भी अत्याचार। लिखने में क्या सार सुजन खुद ही कर लेउ विचार॥ ये हाल मदन की माता ने सुन पाया। गया पुत्र न माना बहुतेरा समझाया॥ महाराज धरन पर खाकर गिरी पछार। सुनौ मदन के मात पिता दोउ रोमें छाती फार॥ उनका क्या रौना सवा शहर रोता था। निज जनों की कर २ याद बिकल होता थो॥ महाराज जुत्रां को लेइ अ' गर हम थाम। तो पाठकगण कहैं लिखा नहिं कीना खोटा काम॥ बस यही आप सें कहना साफ हमारा

है अकल मन्द को काफी एक इशारा। महाराज शहर अमृतसर में जलियान। यहां तलक घर २ के अन्दर हो रहा रुदन महान ॥ अब और अगारी दऊं बयां समझा के ॥ पहरे वाले चौतरफा दिये लगा के। महाराज निकल कर आइ कोईं इन्सान। मार पीट कर उसके संग हों अत्याचार महान ॥ वहां एक शख्स का नाम पद्मलाला था। अमृतसर ही का वो रहने वाला था ॥ महाराज गया वो इसी जाल में आइ। था वहां पर मौजूद हुआ घायल वो गोली खाइ ॥ उसकी स्त्री थी रतन पती ब्रतधारी सुन्दर ससि वदनी बाल वैस सुकमारी। महाराज पती अपने को घायल जान ॥ निश आधी के समय ढूंडनें चली बाग जलियान। थी गर्भवती पति आग मगर भटकाई॥ बाग को जान द्वारे पर अपने आई। महाराज पुलिस का देखा अत्याचार जान न देवै कहीं किसी को मारै पहेरदार। इस ने देखो कैसी तरकीव करी है। पेट वल त्रिया धरनी पर आन परी है। महाराज सरकती सहती कष्ट महान ॥ चार बजे गई पहुंच सुवह बागे जलियां दरम्यान। इन धर्म पती ब्रत की क्या ओट गही है ॥ शहर से बाग तक सरकत भई गई है। महा-

राज सोऊ औंधी पड़कें वो वाल ॥ देखा पति को पड़ा वहीं पर हुआ हाल वेहाल । एक संग नार को गई मूरछा आके ॥ कुछ होश हुआ तव उठी चौंक घवडा के । महाराज रही कैई गोली वदन समाइ ॥ मगर नब्ज मौजूद देख पति सों कहै रुदन मचाय ॥ ७२ ॥

रतन का

दो०-किस गफलत की नींद में पडे पिया वेचैन ।
प्राण नाथ निज नार को, उठौ सुनाओ वैंन ॥

मांड-म्हारें प्रीतम प्राण अधार उठकर बोलो तो सही । थे सोऐ सुख नींद में प्रीतम पग फैलाइ ॥ कहां तन में गोली लगी मोइ सच २ देऊ वताइ ॥ उठकर० ॥ तुम बिन मेरौ कौन है नय्या खेवनहार । वही जात चौकन्न से मेरी नाव पड़ी मंझधार॥उठ०॥ कठिन कष्ट दुख पाइ कें आई तुमरें पास । आसा टूटी तुम विना गुप्ता बैनींदास ॥ उठकर ॥७३॥

रंगा का

दो०-वेहोशी की दशा में, मुख सौं कढैं न बैन ।
मगर पदम व्याकुल विकल पड़ा हुआ बैचैन ॥

रतन का

व० क०-मेरी नय्या खिवय्या पियां प्राणनिध उठ कें बोली अमोली सुनाओ जरा । आप के विन में कि

स्के सहारे जिऊं मेरे सय्या मुझे सो बताओ जरा ॥ कहां कसक आपके तन में होती बलम कहां गोली लगी सो दिखाओ जरा। तुम अनाथों की तरियां जमीं पर पडे मेरी छाती फटै बैठ जाओ जरा ।७५।

रंगा का

दो०-देख विकल निज नार को, अत अधीर बेचैन।
टूटे फूटे शब्द कुछ, लगो पदम यूं कहन ॥७६॥

पदम का

ब० क०-ऐ प्रिये धीर धर दिल में रोवै मती मुझे करवटे इधर को दिला दे जरा ॥ मेरे मरने में कोई रही ना कसर अपना कर मेरे तन से लगा दे जरा रात बीती हैं सारी तडफते कहै बैनी पानी तू जल्दी से लादे जरा ॥ मेरा सूखा हलक नहीं बोली कढै मुझे थोडा सा पानी पिला दे जरा ॥ ७७ ॥

रङ्गा

दोहा-सुनकर स्वामिद के वचन, चली तुरत उठ नार
चार बजे था अंधेरा, पडे न सूज अगार।

छन्द-कुछ नहिं जिसे सूझै चली मन में महा-अकुलाइके। कुछ था अंधेरा द्रगन में आंसू रहे घुमडायके ॥ रस्ता की थी कुछ थकावट सरकन से दूखे था बदन। पति शोक चौथे पाचमें नहिं था

ठिकाने जिसका मन ॥ ढूंडत फिरै पानी चहूं लंग बाग़ में जाती फिरै। गिर २ पडे फिर उठ चले ढहाणों पै ठुकराती फिरै ॥ पानी नहीं पाया कहीं कूऐ पै पहुंची जाइके। नहिं पास लोटा डोर जो पानी पिलावै लाइके ॥ कुंड्डी में सामिल कीच के गदला था कुछ पानी भरा। उस पतिव्रता ने ओढ़-नी का झट अचक पल्ला धरा ॥ पल्ला भिगोकर चल दई पति पास पहुंची आन है ॥ इससे ही कुछ पहले पदम ने त्याग दीने प्रान है। पल्ले से जल मुख में निचोड़ा नब्ज पकडी हाथ है ॥ रैनी कहै लख दम खतम करती रुदन धुन माथ है॥७८॥

रतन का

दो०-आहि पिया किस पर चले मुझको आप विसार।

द्रग खोलौ मुखसें जरा, बोलौं तो भरतार ॥

ब० क०-प्राणों प्यारे हमारे तुमारे बिना किस तरह हो गुजारे बताओ पिया। मुझ अभागी के तांई समझ कम्बखत क्यों छुडा हाथ तुम छोडे जाओ पिया ॥ लैंने पानी गई औ तुम्हारे तई न थी मालुम ये चालैं बताओ पिया। मेरा छोडौ न कर तुम वहोरौ बुरी पती रंजो अलम में फसाऔ पिया॥ ७१॥

रंगा का

दो० रतन इस कदर रोवती, मार २ किलकार ।
आया एक कानिस्टबिल, सुन गम भरी पुकार॥

कानिस्टबिल का

ब० क०-क्योंवे को है तूहल्ला मचाती यहां ऐसा क-रती रुदन वडी होके निडर। यहां न चलती किसी की भी फरहाद है क्यों बहाती है असूओंको चिल्लाइकर ले के सामत तेरी आई तुझको यहां इतनी कहके उठाली झपट कर पकर। मारे धक्के दिये फेर धक्के निकर चल तू बाहर यहां से तू जल्दी निकर॥८१॥

रंगा का

ब० क०-बाग जलियान का मामला यहां तलक एक मंजिल वनाकरके कीना रकम। इस धरम और अधरम को खुद छान लो हाल आगे का अब लिख न सकते हैं हम॥ द्रढ से विश्वास से कार्य होते हैं सब अब यहीं पै रुकी बस हैमारी कलम। बैनी गुप्ता की मिन्नत धरो ध्यान सत्र जय अटलक्षत्र की हुआ किस्सा खतम॥८२॥

बहर शिकिस्त—चैत्र सुदी द्वादस अस्सी सँवत खुशहाल अहुलँग दिखा रहा है। सवारी निकलै श्री मान्यजी की शहरमें ये शोर छारहा है ॥ श्रीमान मोतीलालजी नेहरू डटे पंचघर में आय करके। है साथ में स्वामीजी भी जिन्होंके खबर ये अन्दर हुई शहरके ॥ बधाई है बन्दनवार झन्डी सब पुरजनों ने बनाय करके। बहुत से पुरजन दरश के कारण गए पञ्चघर को धाय करके ॥ कब दर्श दें सीघ्र आनहम को हरेक बशर यही चारहा है। सवारी० ॥ पुलिस ने सुनते ही इस खबर के इन्तजाम कुछ दिए कराके। कानिस्टबिल छत्तीस ज्वान थे सो पञ्चघर पर दिए अडाके ॥ खबर ये पाकर श्रीमान्यजी ने कही ये सब को गिर्द सुना के। सब अपनी २ जगह को जाओ हम आए इकले शहर को धाके॥ चली सवारी जिस वक्त वहां से पुलिस का दल पीछे जारहा है। सवारी० बैठ चौकडी में पुरजनों को दरश दिया है जिन्होंने आके। खुश होके मनमें कुल नग्र वासी रहे हैं जयर कार सुनाके ॥ हुई है पुष्पों की खूब वरषा जय शब्द करते सिहा सिहाके। सवारी चौतर्फ होके निकली गए हैं मन्दर को फेर धाके। वक्त शाम के हो लेक्चर

भी ये घँटेवाजा सुना रहा है। सवारी० ॥ आठ बजे शाम के मन्दर में श्रीमानजी ने दिए लैक्चर । रहो सभी मिल के हिंदू मुसलिम द्वेष नहो कोई दिलके अन्दर ॥ करौ कार्य मिलकर कार्यकर्ता स्वदेशी कीजै प्रचार घर घर ॥ बिदेशी का दो वहिष्कार कर भली करेंगे हमेश शँकर। एक तर्फ बैठा गुप्त बैनी बहर शिकिस्ता बना रहा है। सवारी०॥

दो०—कृष्णपक्ष बैषाख तिथि, नवमी दिन इतवार ।
पूर्ण कियौ सांगीत को, देवी विप्र उचार ॥

॥ इति समाप्त ॥

मिलने का पता--

रामस्वरूप बैनीराम हाथरस,

सुदर्शन प्रेस हाथरस।

मे छपाई अत्यन्त सुँदर और शीघ्रतासे सस्ती दर पर दीजाती है। हिंदी उर्दू और अंग्रेजी का सादा रंगीन और जौबर्क का काम आप के मन माफिक वायदे पर दिया जाता है। एक बार काम भेजकर परीक्षा करें।

सुदर्शनलाल जैन मैनेजर

सुदर्शन प्रेस

हाथरस

हमारे सांगीतों का सूचीपत्र ॥

सां० चंदनकुमारि =)

सां० चंदो धोबिन =)

सां० बाग जलियान ।)

✤ सां० लैलामजनूं ।)

✤ सां० ब्रहोस्न का ब्याह प्रथम भाग ।-)

✤ सां० ब्रहोस्न का ब्याह द्वितीय भाग ।-)

✤ सां० ढूला भाइडी =)

✤ सां० कम्पला गढ़ संग्राम =)

✤ सां० प्रह्लाद भक्त =)

नोट--जिन सांगीतों के पहले पुष्पका चिन्ह है वहभी शीघ्र छपने वाले है ।

पुस्तक मिलने का पता--

बाबू रामस्वरूप गुप्त ला० बैनीर

सुभान दरवाजा--

हाथरस